AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

समता, विविधता और समावेशन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. राजेश गौड़
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
केंद्रीय विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

समाज जीवित व्यक्तियों का समूह है जो अपने विचारों, मूल्यों व गतिविधियों में हमेशा गतिशील रहता है। यही समाज शिक्षा का संगठन अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करता है। जब समाज की आवश्यकताएं एवं आकांक्षाएं बदलती हैं तो शिक्षा की नई नीति निर्धारित की जाती है। वर्तमान समय में संपूर्ण राष्ट्र के विकास की अवधारणा एवं सभी तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच समाज की विशिष्ट आवश्यकता है। लोकतांत्रिक सरकारें भी इस दिशा में योजना पूर्ण विकास का कार्य कर रही हैं। समता, विविधता और समावेशन समाज की विशिष्ट आवश्यकता एवं उन्नयन पर प्रकाश डालते हैं। समता इस तथ्य पर प्रकाश डालती हैं कि सभी को समान अवसर और संसाधन उपलब्ध कराए जाएं क्योंकि शैक्षिक संस्कार समाज को सभ्य बनता है'। शिक्षा और समाज के परिप्रेक्ष्य में समता, विविधता और समावेशन एक व्यापक समदर्शी भाव अपने में समाहित किए हुए हैं। भारतीय दृष्टिकोंण के साथ–साथ आज वैश्विक समझ की जो विचारधारा संयुक्त राष्ट्र संघ, यूनेस्को और यूनिसेफ द्वारा विकसित की जा रही है, वह समता एवं समावेशन द्वारा समग्र विकास, प्रगतिशील विकास तो करेगी ही इसके साथ जो समाज का दबा–कुचला, शोषित– वंचित और पिछड़ा समाज है, उनमें शैक्षिक विकास के तहत अलगाव, विरोध, टकराहट, तनाव जैसी गतिविधियां कम होगी। उपरोक्त समाज को आवश्यकतानुसार अवसर एवं सुविधायें उपलब्ध कराकर शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति ही नहीं बल्कि आम जनमानस एवं राष्ट्रीय हित को संरक्षित करने हेतु सद्भावपूर्ण विचार, करुणा,सहयोग, अहिंसा और भ्रातृत्व जैसे सद्गुण और विचार भी पैदा होंगे जो संपूर्ण जगत में भारत को विकसित करने एवं विश्व गुरु बनने का परचम लहराने का कार्य करेगा। इसलिए समतामूलक कार्य शैली, विविधता का सकारात्मक दृष्टिकोंण, एकत्व की भावना एवं समावेशन द्वारा सभी लोगों को एक साथ रहकर जीवन की उच्चता की ओर गमन करते हुए सबको गले लगाने पर विशेष जोर देना अपरिहार्य है।

मुख्य शब्द

नियमित कक्षा, दृष्टिकोंण, समतामूलक, समरसता, सहिष्णुता, विविधता.

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के उदय से ही ज्ञान और विकास के पहिये निरंतर बढ़ रहे हैं। किसी भी राष्ट्र का विकास दो तत्वों पर आधारित है: प्राकृतिक संसाधन एवं मानवीय संसाधन। प्राकृतिक संसाधन तो प्रकृति की देन है परंतु मानवीय

संसाधन को मनुष्य अपने बुद्धि,विवेक, ज्ञान एवं कौशल द्वारा क्षण–प्रतिक्षण विकसित कर रहा है। इन सभी का विकास शिक्षा द्वारा ही होता है। संसार के सभी देशों में शिक्षा कों मानव का मूल अधिकार माना गया है। शिक्षा का लक्ष्य अधिगमकर्ता को समाज के सफल उत्पादक सदस्य बनाने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करना है। हमारे देश में भौगोलिक,भाषायी, सामाजिक, सांस्कृतिक, जातीय एवं आर्थिक विविधता पाई जाती है। यहां पर अधिगमकर्ता अर्थात छात्रों को समान लक्ष्य तक पहुंचने में कुछ लोगों को आसानी है तो कुछ लोगों को थोड़ी कठिनाई है परंतु कुछ लोगों को बहुत ही कठिनाई है एवं दरूहता है, जो अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते और विकास की मुख्य धारा से विरत हो जाते हैं। ऐसे में संपूर्ण राष्ट्र के विकास की अवधारणा ओझल सी लगने लगती है। संपूर्ण विकास को चरितार्थ करने हेतु सामान्य के साथ समता के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर विशेष आवश्यकता वाले समूह को आवश्यकतानुसार संसाधन उपलब्ध कराया जाना अपरिहार्य है ताकि सभी का सर्वांगीय विकास संभव हो सके।

समता का अर्थ है सभी को समान अवसर और संसाधन देना क्योंकि समाज में सभी की जरूरतें और परिस्थितियों अलग–अलग है, इसलिए उन्हें समान परिणाम मिलने के लिए हर व्यक्ति को वह चीज देना जो शिक्षा एवं सफलता हसित करने के लिए जरूरी है। यहाँ समता के संप्रत्यय को समझना आवश्यक है, समता का आशय है कि सभी व्यक्तियों को सामान और उचित रूप से विचार करने तथा उनके समान अवसरों की पहुंच प्रदान करने की भावना। यह एक आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक और मानविक, मानवाधिकार प्रणाली है जो सभी व्यक्तियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में उनकी योग्यता और क्षमता के आधार पर न्यायपूर्वक और समान तरीके से व्यवहार करने का समर्थन करती है। समता की भावना किसी समुदाय, वर्ग, जाति, भाषा, लिंग और धर्म के प्रति भेदभाव रहित व्यवहार के मार्ग को प्रशस्त करती है। इस प्रकार समता की भावना समाज के स्वस्थ मानसिक विकास हेतु आवश्यक है। शिक्षा, जो मनुष्य के व्यवहार परिवर्तन एवं विकास को गति प्रदान करती है वह समतामूलक दृष्टिकोंण से ओत–प्रोत होनी चाहिए। शिक्षा की योजना में संचालन हेतु पथ–प्रदर्शक का होना महत्वपूर्ण है। शिक्षण को प्रभावशाली बनाने एवं बालक के समग्र विकास हेतु शिक्षक के व्यवहार एवं कार्य प्रणाली समतामूलक होने ही चाहिए तभी समावेशी शिक्षा व्यवस्था का पालन हो सकेगा।

समता मूलक शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा व्यवस्था से जिसमें सभी सीखने वाले चाहे उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और इच्छित लक्ष्य के अवसरों तक समान पहुंच प्राप्त होती है। इसका उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूह द्वारा सामना की जाने वाली असमानताओं को दूर करना और यह सुनिश्चित करना है कि सभी लोगों को सीखने, बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए समान अवसर मिल सके। शिक्षा की पहुँच और प्रसार को बढ़ाने तथा शिक्षार्थियों के सबसे कमजोर समूह की आवश्यकता को पूरा करने के लिए समतावादी शिक्षा प्रणाली पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। एन.ई.पी. –2020 में समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है।

नेशनल इक्विटी प्रोजेक्ट के अनुसारः "शैक्षिक समता का आशय है कि प्रत्येक बच्चे को वह सब कुछ मिले जो अपनी पूर्ण शैक्षणिक और सामाजिक क्षमता को विकसित करने के लिए चाहिए। इस प्रकार बच्चों को न केवल संसाधन की आवश्यकता है बल्कि उच्च गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए सुविधाएं भी।"

डॉ. गैरी वॉकर रॉबर्ट्स के अनुसारः समता इक्विटी को इस प्रकार शब्दों में बांधने का प्रयास किया गया हैः "एक शैक्षिक परिदृश्य का पुनर्निर्माण करना जहां सभी छात्रों को अपने शैक्षणिक लक्ष्य तक पहुंचाने का उचित मौका मिले।"

इस प्रकार समता एवं समावेशन द्वारा कक्षा–कक्ष की परिस्थितियों को अधिगमकर्ता के अनुसार सरल, सरस और सहज बनाकर सभी को प्रगित के पथ पर बढ़ने का समान अवसर उपलब्ध कराने का सफल प्रयास होना चाहिए। समता से मिलता–जुलता समानता संप्रत्यय भी है जिसको कुछ लोग समता ही समझ लेते हैं जबकि समता और समानता अलग–अलग अर्थ प्रकट करते है।

समता मूलक शिक्षा का उद्देश्य

समग्र विकास अर्थात! संयुक्त राष्ट्र संघ के एसडीजी के लक्ष्यों को प्राप्त करना अति आवश्यक है। राष्ट्र की संपूर्ण जनसंख्या के शत–प्रतिशत विकास द्वारा ही उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान समावेशन की अवधारणा को वास्तविक रूप से विकास के पटल पर लाने में समता मूलक शिक्षा ही चित्र उकेरने का कार्य करेगी। इसकी गहनता को एनईपी 2020 में आलोकित किया है। शिक्षा की पहुँच सभी तक करने के लिए, समान अवसरों को बढ़ावा देने के लिए, वंचित एवं पिछड़े समूह को विकास की धारा से जोड़ने के लिए समतामूलक शिक्षा के उद्देश्य हैं:

- समाज में वंचित समूहों की जरूरतों और परिस्थितियों को समझना एवं उसका समाधान करना।
- अवसरों की समानता एवं अकादमी प्रगति हेतु वंचित व पिछड़े समूह को शिक्षा की पहुंच करना।
- बालकों में समदर्शी एवं समभाव जैसे गुणों को विकसित करना।
- समग्र विकास एवं प्रति व्यक्ति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करना।
- वैश्विक ज्ञान संचार की अविरल धारा में सभी को जोड़कर विश्व चेतना मंच तक पहुंच प्रदान करना।
- एनईपी 2020 के अनुपालन में सभी छात्रों में करुणा, सहानुभूति, साहस, वैज्ञानिक चिंतन, रचनात्मक कल्पना शक्ति एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- बालकों में समानता, भ्रातृत्व, मानवता एवं वर्ग भेद रहित विकास के गुणों की स्वीकार्य बनाना।

इस प्रकार समता एक व्यापक संप्रत्यय है, जो समाज में बिना किसी भेदभाव के हर व्यक्ति को उन्नति करने का अवसर प्रदान करता है। समतामूलक शिक्षा भी समाज को मानवता एवं समग्र विकास के पदचिन्हों पर आगे बढ़ने का हुनर पैदा करती है और सभी को विकास की मुख्य धारा से जोड़ती है। समता 'मनका मनका एक समान' का भाव व्यक्त करती है। 'जियो और जीने दो तुम बढ़ो हम बढ़े और उन्नति करें' जैसे मनोभाव पर विशेष जोर देती है।

समता और शिक्षक

भारतीय समाज विविधिता में एकता के भाव से संचरित है। राष्ट्र के समग्र विकास एवं वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करने के लिए समाज व राष्ट्र के हर तबके, वर्ग एवं समूह का समदर्शी विकास अपरिहार्य है। इन सब का प्रगतिशील विकास करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय शिक्षा को भारतीय संस्कृति, भारतीय विरासत और भारतीय मूल्यों से गहराई से जोड़ने के साथ–साथ विश्वव्यापी शैक्षिक परिवर्तनों, शैक्षिक विकास और शैक्षिक नवाचारों के अनुरूप व्यवस्थित करने में समतामूलक दृष्टिकोंण और शिक्षा संरचना बहुत ही कारगर सिद्ध होगी। शिक्षक, शिक्षा प्रणाली का आधार है, शिक्षा को गति देने वाला चालक है, सामाजिक इंजीनियर है, भावी पीढ़ी का निर्माता है, सभ्यता और संस्कृति का अभिभावक है, अनुशासन और चरित्र का प्रतीक है, शिक्षा जगत में होने वाली क्रांति की धुरी है और सब का पथ प्रदर्शक है। भारतीय समाज को उसकी भयावह स्थिति से उबारने में शिक्षक ही एक आशा की किरण है।

समाज की वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन करने की क्षमता और शक्ति केवल शिक्षक में ही है। कोठारी आयोग 1964–66 ने स्पष्ट किया है कि हमारे देश के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा है। 'सबका साथ सबका विकास' जैसी अवधारणा समतामूलक शिक्ष में समाहित है। समाज का वंचित वर्ग, अति पिछड़ा समूह, शोषित व दलित समुदाय जो आधारभूत सुविधाओं से वंचित है, आवश्यक संसाधनों एवं सुविधाओं के अभाव में अपने शिक्षा को पूरी नहीं कर पाता। ऐसे लोगों को संसाधन एवं सुविधाओं की पहुंच प्रदान कर समग्र विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में समतावादी शिक्षा महत्वपूर्ण कार्य करती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में समाज स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व के सिद्धांतों पर आधारित है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–45 में यह प्रावधान है कि 14 वर्ष की आयु तक बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था राज्य करेगा। संविधान शिक्षा प्रणाली संचालक को भी आगाह करता है कि किसी भी बच्चे को धर्म, मूलस्थान, वंश अथवा जाति के आधार पर शिक्षा प्राप्त करने हेतु वंचित नहीं किया

जाएगा। इस प्रकार समतावादी दृष्टिकोंण से अभिभूत शिक्षक समग्र विकास एवं विश्व गुरु जैसी अवधारणा को मूर्त रूप देने में सफल होगा।

विविधता

विविधता का अर्थ है कि विभिन्न प्रकार के लोगों के बीच अंतर को समझना और उनके साथ समान रूप से सहअस्तित्व में रहना, रूढ़िवादिता, पूर्वाग्रह और भेदभाव से मुक्त होकर उनके साथ समान रूप से रहने की जगह साझा करना। विज्ञान एवं पर्यावरण में विविधता शब्द का अर्थ दूसरे संदर्भ में दिखता हैः एक पारिस्थितिक तंत्र में मौजूद विभिन्न प्रजातियों की संख्या और उनमें से प्रत्येक प्रजाति के सापेक्ष प्रचुरता के रूप में। वास्तव में विविधता विभिन्न पृष्ठभूमि, जीवन शैली, सामाजिक अनुभव, नस्ल और धर्मो से आने वाले लोगों की एक विस्तृत श्रृंखला है। विभिन्न दृष्टिकोंण एवं पृष्ठभूमि का सहअस्तित्व एक विविधता है। भारत में धर्म, भाषा, भोजन, कपड़े, नस्ल, जनजाति क्षेत्र आदि कई तरह की विविधता देखी जा सकती है। विविधता को समझने के लिए मुख्य पहलू अलग–अलग धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वर्गीय पृष्ठभूमि है। 86वें संविधान संशोधन द्वारा मौलिक अधिकार में 21क जोड़कर शिक्षा का अधिकार मौलिक अधिकार बना। समग्र साक्षरता, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन जैसे कुछ शैक्षिक कार्यक्रम है, जिसमें गरीब, सुविधा वंचित एवं दिव्यांगजन के बच्चों को सरकारी स्कूल में पढ़ने का प्रावधान है। इस शिक्षा में आर्थिक असमानता को कम करके सभी को शिक्षा में भागीदारी सुनिश्चित करने का अवसर मिल रहा है।

विविधता का संबंध किसी विशेष प्रणाली, समूह या पर्यावरण के भीतर मौजूद विविधता, सीमा और अंतर से है। इनमें विभिन्न तत्वों या विशेषताओं की उपस्थिति शामिल है जो किसी प्रणाली की समग्र समृद्धि और जटिलता में योगदान करते हैं। विविधता की अवधारणा जीवन की जैविक संस्कृति, पारिस्थितिक और सामाजिक पहलुओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई। विविधता एक बहूआयामी अवधारणा है जैसेः जैविक विविधता, सांस्कृतिक विविधता, पारिस्थितिक विविधता, सामाजिक विविधता, शैक्षिक व्यवस्था आदि। रविंद्र नाथ टैगोर ने लिखा हैः "भिन्नताए विविधता को जन्म देती है,एक जुटता विविधता को संरक्षित करती है।"

इस प्रकार विविधता जीवन एवं मानवीय अनुभवों की बहुलता और विशष्टता का जश्न मनाती है। यह मतभेदों के मूल्यों को पहचानती है, लचीलेपन को बढ़ावा देती है, और पारिस्थितिक तंत्र, समुदायों और समाजों के स्वास्थ्य, अद्वितीय दृष्टिकोंण, अनुभव और पृष्ठभूमि को शामिल करती है।

विविधता एवं शिक्षा

विविधता में किसी समूह या व्यवस्था के भीतर विशेषताओं, अनुभवों, और दृष्टिकोणों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल होती है। विभिन्न प्रकार की विविधता को समझने के लिए हमें व्यक्तियों की बहुमुखी प्रकृति एवं विभिन्न संदर्भ में उनके द्वारा लाये वाले मूल्य की सराहना करने में मदद मिलती है। विविधता में जनसंख्या विविधता, ज्ञानात्मक विविधता, अनुभावत्मक विविधता, सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक विविधता आदि का वर्णन मिलता है। शिक्षा के दृष्टिकोंण से इन सभी दृष्टिकोंण की विविधता का विशेष महत्व है। सामाजिक विविधता व्यक्तियों और समुदायों के बीच सामाजिक पृष्ठभूमि,पहचान, अनुभव, दृष्टिकोंण में अंतर से संबंधित है। इसमें नस्ल, जातीयता, लिंग, आयु, सामाजिक–आर्थिक स्थिति और यौन अभिविन्यास जैसे कारक शामिल हैं। सामाजिक विविधता समाज के भीतर समावेशी समानता और समझ को बढ़ावा देती है, आपसी सम्मान और सहयोग को बढ़ावा देती है जिसके द्वारा समता मूलक शैक्षिक विकास में विविधता और शिक्षा के महत्व को बढ़ावा दिया जा सकता है।

ए.के.सी. ओटावे के अनुसारः "शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया व्यक्तियों एवं सामाजिक समूह के बीच की अंतः क्रिया है जो व्यक्तियों के विकास के लिए कुछ निश्चित उद्देश्यों से की जाती है।" इस प्रकार शिक्षा की प्रक्रिया एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो विविधता में एकता को बढ़ावा देती है। लोगों के सोचने की शैलियाँ अलग–अलग होती है, सोचने की शैलियों की यह विविधता विचारों और समाधानों की व्यापक श्रेणी में योगदान देती है। शिक्षा इन्हीं सोचने समझने की शैलियों की धार को और अधिक तेज कर देती है, जिससे समाज और राष्ट्र व्यापक विकास की ओर अग्रसर होता है तथा उद्देश्यों को प्राप्त करता है।

शिक्षा में विविधता का उद्देश्य

विविधता एवं समावेशन के संदर्भ में अमेरिका तथा अन्य पाश्चात्य देशों ने 20वीं सदी के उत्तरार्ध में ही कई शोध विकास के कार्य किए गए जिससे स्पष्ट होता है कि जब छात्रों को सकारात्मक विविधता के अनुभव होते हैं तो उनके समुदाय में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में उनकी रुचि बढ़ जाती है। समाज या लोगों के समूह में वंश, वर्ण, लिंग, भाषा, धर्म,जाति, संप्रदाय, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, साक्षरता स्तर, योग्यता–क्षमता स्तर, भौगोलिक क्षेत्र, जलवायु आदि की विविधता पाई जाती है। शिक्षा में सभी तरह की विविधता का सम्मान करते हुए सभी लोगों को शिक्षा प्राप्त करने एवं संसाधन संपन्न बनाने की दिशा में समावेशी पहल अपनाने की आवश्यकता है। शिक्षा में विविधता के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- समान अवसर के साथ व्यक्तियों की जन्मजात क्षमता को विकसित करना।
- हर बालक को बेहतरीन जीवन और उद्देश्य पूर्ण जीवन जीने के लिए तैयार करना।
- समग्र विकास धारा में ज्ञान एवं कौशल द्वारा सभी को जोड़ना।
- नवीन परिवेश एवं विकासात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ समावेशन को बढ़ावा देना।
- छात्रों को प्रारंभिक कक्षा से विविधता स्वीकार करने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण विकसित करना।

विविधता एवं शिक्षक

विविधता वह सब कुछ है जो लोगों को एक दूसरे से अलग बनाती है। अलग–अलग विशेषता वाले लोगों,चीजों या तत्वों का मिश्रण विविधता को दर्शाता है। सभी लोगों को समान रूप से स्वीकार करके, सम्मान करके विविधता को सार्थक रूप से उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक समाज का शिल्पी होता है, सुविधाकर्ता होता है, जो विविधता व विभिन्न लोगों के बीच बातचीत और स्वस्थ चिंतन को प्रोत्साहित करके समाज को नया परिष्कृत रूप देने का प्रयास करता। शिक्षक अपने कार्यों एवं विचारों से दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम होता है और छात्रों के साथ समता व विविधता को स्वीकार करते हुए सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है। शिक्षक को कक्षा में ऐसा वातावरण प्रस्तुत करना चाहिए कि छात्र नई प्रवृत्तियों एवं आकांक्षाओं को स्वीकार करने हेतु प्रेरित हो सके और सक्षम बनें। शिक्षक अपने ज्ञान, व्यवहार एवं व्यावसायिक कौशल से छात्रों को विविधता का सम्मान करने, समावेशन का दृष्टिकोंण अपनाने व अंधविश्वास एवं कुरीतियों को त्याग कर समग्र विकास करने और राष्ट्र प्रेम जैसी भावनाओं को आत्मसात कर विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थवान बना सकता है। विविधता से जीवन में कई लाभ है। यह हमारे जीवन में कई रंग लाती है। हम संस्कृति के विभिन्न पहलुओं और प्रकारों का सम्मान करना सिखाते हैं। सामाजिक समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए हमें सभी वर्गों और समुदायों को समाहित करने वाले पाठ्यक्रम और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पारायण योजनाओं की आवश्यकता है।

समावेशन

समावेशन को एक सार्वभौमिक मानव अधिकार के रूप में देखा जाता है। समावेशन का उद्देश्य जाति, लिंग, दिव्यांग, चिकित्सा या अन्य आवश्यकता के बावजूद सभी लोगों को गले लगाना है। यह समान पहुँच, अवसर प्रदान करने, भेदभाव और असहिष्णुता से छुटकारा पाने के बारे में प्रावधान करता है। समावेशन सार्वजनिक जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। समावेशन एक व्यापक अवधारणा है, जो विविधता को स्वीकार कर, एक साथ रहने, जीवन शैली अपनाने तथा सहअस्तित्व और सम्मान का विचार देती है। संस्थानों में समावेशन, वित्तीय समावेशन, सामाजिक समावेशन के साथ शिक्षा में समावेशन वर्तमान की आवश्यकता है। समावेशन शब्द के अर्थ को निम्नलिखित विचारों से समझ सकते हैं।

"सभी लोगों और समूहों को गतिविधियों, संगठनों, राजनीतिक प्रतिक्रियाओं आदि में शामिल करने और एकत्रित करने की नीति समावेशन है।"

"शारीरिक या मानसिक दिव्यंगता वाले छात्रों को नियमित कक्षाओं में रखने और उन्हें सुविधाएं प्रदान करने की शैक्षिक नीति समावेशन कहलाती है।"

इस प्रकार समावेशन एक ऐसा सिद्धांत है जिसके अनुसार सभी को विशेषकर दिव्यांगों और पीड़ित लोगों को समान सुविधाएं, गतिविधियों और अनुभवों का लाभ दिलाने का पक्षधर है। स्कूलों में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को समावेश करने की एक सशक्त संस्कृति है।

समावेशन व शिक्षा

हमारे देश में असमानता, विविधता एवं भिन्नता हर जगह विद्यमान है। समावेशन में इस असमानता, विविधता एवं भिन्नता को सकारात्मक रूप से स्वीकार करके सभी को एक स्थान, एक तरह का वातावरण एवं सुविधाएं प्रदान करने का विधान किया जाता है। इसी के साथ शिक्षा सामाजिक–आर्थिक, समायोजन, व्यवहार परिवर्तन, परिमार्जन एवं परिष्करण का ढंग दिखती है, अंतर्निहित शक्तियों का पूर्ण विकास करती है। इस प्रकार समावेशन और शिक्षा, समावेशी शिक्षा पर ध्यान आकर्षण करती है। समावेशी शिक्षा का अर्थ है कि सभी छात्र अपने पड़ोस के स्कूलों में आयु उपयुक्त नियमित कक्षाओं में भाग लेते हैं और उनका स्वागत किया जाता है। सभी लोगों को समतावादी दृष्टिकोंण से स्कूल में जीवन के सभी पहलुओं में सीखने, योगदान देने और भाग लेने के लिए समर्थन दिया जाता है। समावेशी शिक्षा का आशय है– सभी छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना, उनकी विविध आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करना जो उत्तरदायी, स्वीकार्य, सम्मान जनक तथा सहायक हो। समावेशी शिक्षा एक सामान्य शिक्षण वातावरण में की जाती है, जहां विभिन्न पृष्ठभूमि और विभिन्न क्षमताओं वाले एक समावेशी वातावरण में एक साथ सीखते हैं, शिक्षा ग्रहण करते हैं।

समावेशी शिक्षा इस तरह के शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा दे रही है जहाँ सकारात्मक सहयोग, अपनापन एवं सामाजिक एकजुटता को महत्व दिया जाता है। इसमें शैक्षिक संस्थानों में सकारात्मक माहौल प्रदान करना, अपनेपन की भावनाओं को बढ़ावा देना और उचित व्यक्तिगत,सामाजिक, भावनात्मकता के साथ शैक्षिक लक्ष्य की ओर छात्रों की प्रगति सुनिश्चित करने पर जोर दिया जाता है। आज समाज के संपूर्ण विकास एवं भागीदारी हेतु सभी लोगों को अपने लक्ष्य तक पहुंचने का समतापरक अवसर दिया जाना अपरिहार्य है। सभी व्यक्तियों में विकास और अभिव्यक्ति की जन्मजात क्षमता होती है। प्रत्येक व्यक्ति/बालक को शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से पोषित होने का अधिकार है। सभी व्यक्तियों को समान पहुंच और अवसर का अधिकार है इसलिए समानता हेतु सभी प्रकार के भेदभाव या नुकसान से सुरक्षा और समान भागीदारी को सक्षम करने के लिए समावेशन और समावेशी शिक्षा अति आवश्यक है।

समावेशन एवं शिक्षा के उद्देश्य

समावेशन, शिक्षा की योजना में सभी को समान महत्व देकर समरसता एवं सहिष्णुतापूर्ण सीखने का अवसर प्रदान करता है। समावेशन में शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- यह सुनिश्चित करना कि सभी विद्यार्थियों को नियमित स्कूल प्रणाली में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार हो।
- विभिन्न योग्यताओं, विभिन्नताओं और दिव्यांग्ताओं वाले सभी छात्रों के साथ समान व्यवहार करने की भावना का विकास करना।
- सभी छात्रों के लिए बाधा मुक्त शिक्षा की पहुंच प्रदान करना।
- समावेशी वातावरण के साथ उपयोगी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सभी को जोड़ना।
- प्रत्येक छात्र की आवश्यकतानुसार अलग–अलग शिक्षण विधियों एवं रणनीतियों का उपयोग करना।
- व्यापक, कौशल पूर्ण एवं समझ आधारित शिक्षण के साथ सभी छात्रों को नियमित स्कूल में शिक्षा उपलब्ध कराना।
- विविधता में एकता को बढ़ावा देना अर्थात् जाति, लिंग, दिव्यंग्ता, चिकित्सा आदि आवश्यकताओं की परवाह किए बिना सभी छात्रों को गले लगाना।

इस प्रकार समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी छात्रों को सामान शैक्षिक अवसर प्रदान करना और उन्हें सीखने

की प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना ताकि समग्र विकास के साथ विकसित भारत की संकल्पना को पूरा किया जा सके।

समावेशन और शिक्षक

हमारा संविधान जाति,धर्म, आयु और लैंगिक आधार पर किसी भी प्रकार के विभेद का निषेध करता है और इस प्रकार एक समावेशी समाज की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत करता है। 'समता का अधिकार' के अंतर्गत अनुच्छेद 15 में सामाजिक समानता का विधिक प्रावधान है जिसके परिप्रेक्ष्य में बच्चों के सामाजिक, जातिगत, आर्थिक, लैंगिक, शारीरिक एवं मासिक दृष्टि से भिन्न देखे जाने के विपरीत एक स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता है, जिससे लोकतांत्रिक स्कूलों में छात्रों के समुचित समावेशन हेतु समावेशी शिक्षा के वातावरण का सृजन किया जा सके। समावेशन में शिक्षक सामान्य और दिव्यांग विशेष आवश्यकता सभी बच्चों से एक तरह का व्यवहार करता है। शिक्षक अपने सभी छात्रों को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाने का प्रयास करता है ताकि सभी छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। शिक्षक द्वारा बालकों की वैयक्तिक विभिन्नताओं, सृजनशीलताओं, कलात्मक रुचियों, विशेष आवश्यकताओं, खूबियों की पहचान कर उन्हें सुविधा उपलब्ध कराने में तत्परता व लगनशीलता दिखाई जानी चाहिए। समावेशन में शिक्षण कार्य करना एक चुनौती पूर्ण कार्य है लेकिन शिक्षक ही राष्ट्र निर्माता, भाग्य विधाता और कुशल कारीगर भी होता है। उसे विशेष कक्षा का आयोजन कर अधिगकर्ता की कठिनाइयों, कमियों एवं रुचियों को जानकर उपयुक्त उपचारात्मक शिक्षण द्वारा कौशल, हुनर एवं सुयोग्य नागरिकता का विकास भी कर सकता है।

शिक्षा मानव समाज को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने का सशक्त आधार है। भारतीय समाज सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक और धार्मिक विशेषताओं से आच्छादित है। हर समाज की परिस्थितियाँ और आवश्यकताएं भी अलग–अलग है, जिसके कारण सोचने, समझने, चिंतन करने में ही असमानताएं नहीं है बल्कि उनके विकास और आगे बढ़ाने के साथ राष्ट्रीय चेतना भी भिन्नता प्रकट करती है। ऐसे समाज के विकास में सुगम, समरसता पूर्ण शैक्षिक वातावरण का सृजन करने में समता, विविधता एवं समावेशन जैसी अवधारणाओं को सकारात्मकता के साथ स्वीकार करके, समग्र विकास व राष्ट्रीयता के साथ अंतरराष्ट्रीय की समझ पैदा करके हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। आज संपूर्ण जगत में निरंतर विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के आविष्कारों द्वारा नित नये आयाम और विचारों का सृजन हो रहा है। ऐसे में राष्ट्र की सीमा में निवास करने वाले सभी लोगों के समता पूर्ण विकास हेतु नूतन तरकीबों को अपनाकर शिक्षा तंत्र को अद्यतन करने की आवश्यकता है जो समाज में विकास का व्यापक दृष्टिकोंण, मानवता, सहृदयता, सहयोग एवं अहिंसा की भावना का विकास करेगा। शिक्षा हेतु संसाधन की पहुंच बनाना, सिखने हेतु समावेशी वातावरण तैयार करना, विविधता में ग्रहणशीलता एवं स्वीकार्यता को महत्व देना आज की शिक्षा प्रणाली में उपयोगिता पूर्ण है। उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षा की योजना में समता, विविधता और समावेशन अति महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची

1. पचौरी, गिरीश (2013) *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,* इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
2. लाल, रमन बिहारी (2009) *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत,* रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
3. टंडन, उमा अरुणा गुप्ता (2011) *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,* आलोक प्रकाशन, अमीनाबाद, लखनऊ।
4. सिंह, कर्ण (2007) *भारतीय शिक्षा का एतिहासिक विकास,* एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
5. पाठक, पी. डी. (1974) *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. शर्मा, जया (2016) *लिंग, विद्यालय एवं समाज,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. ठाकुर, यतीन्द्र (2017) *समावेशी शिक्षा* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।

––==00==––